Research Paper

E-ISSN NO : 2455-295X | IMPACT FACTOR VALUE : 5.983
VOLUME : 11 | ISSUE : 1 | SPECIAL ISSUE JANUARY-2025

प्राचीन भारत के अफगानिस्तान के साथ संबंध

सुभाष चन्द्र शोधार्थी (इतिहास), टांटिया विश्वविद्यालय, रीको, श्रीगंगानगर.

ABSTRACT:

भारत अफगानिस्तान के बीच आधुनिक समय में खींची गई सीमा रेखाएं और कृत्रिम रूप से निर्मित डूरंड रेखा से पहले इनके बीच हजारों सालों से रिश्ते रहे है। ऋग्वेद में हमें अफगानिस्तान की नदियों और अनेक जातियों उल्लेख मिलता है। शार्तुघई का सम्बन्ध हड़प्पा संस्कृति से व्यापारी नगर के तौर पर रहा है। यूनानी इतिहासकार हेरोडोटस ने अफगानिस्तानी लोगों को आर्य माना है। गांधार का उल्लेख महाभारत में मिलता है इसका सम्बन्ध भारतीय नगर हस्तिनापुर से था। पाणिनी ने अफगानिस्तान की भौगोलिक स्थिति का वर्णन किया है। कंबोज का उल्लेख भी महाभारत व अर्थशास्त्र में मिलता है। चंद्रगुप्त मौर्य ने मौर्य राजवंश की स्थापना के बाद सेल्यूलर निकेटर को पराजित कर अराकोसिया (कंधार) और पेरोपनिसडाई (काबूल) को अपने साम्राज्य में शामिल किया था। इतिहासकार वी. ए. स्मिथ ने हिंदुकुश पर्वत को भारत की वैज्ञानिक सीमा माना था। अशोक के अभिलेख भी अफगानिस्तान से प्राप्त हुए हैं। कनिष्क का रबातक अभिलेख अफगानिस्तान से मिला है। मूर्तिकला की गांधार शैली का संबंध बौद्ध धर्म से है। चीनी यात्री फाह्यान ने जब भारत की यात्रा की तो उसने अफगानिस्तान में एक अनेक जगह बौद्ध विहार व स्तूप देखे तथा बौद्ध अनुयायियों को भी देखा था। बामियान में निर्मित बौद्ध मूर्तियां भारतीय संस्कृति और बौद्ध धर्म की पराकाष्ठा को दिखाती है। चीनी यात्री ह्वेनसांग ने बामियान की इन मूर्तियों के चकाचौंध के बारे में बताया है। ह्वेनसांग ने अफगानिस्तान में बुद्ध के अवशेषों को पूजने की बात कही है। ह्वेनसांग ने कपीश के राजा को क्षत्रिय बताया तथा महामोक्षपरिषद की सभा का जिक्र किया था।

KEYWORDS:

डूरंड रेखा, हड़प्पा संस्कृति, गांधार शैली, अभिलेख, ऋग्वेद ।

प्रस्तावना

भारत अफगानिस्तान के बीच आधुनिक समय में खींची गई सीमा रेखाएं और कृत्रिम रूप से निर्मित डूरंड रेखा से पहले इनके बीच हजारों सालों से रिश्ते रहे हैं। अफगानिस्तान आरंभ में भारतीय आर्य और ईरानियों से प्रभावित था। अफगानिस्तान को प्राचीन तथा मध्यकाल में कई नामों से जाना जाता था जिसमें आर्यना, आर्यनुग्र बीजू, पख्तिया, खुरासन, पश्तूनख्वाह, रोह आदि। काबुल तथा कंधार भारत के दो दरवाजे थे। ऋग्वेद में आर्य पूर्वी अफगानिस्तान से परिचित थे। वेदों में हमें कुंभा (काबूल), क्रुमु (कुर्रम), सुवास्तु (स्वात) और गोमती (गोमल) नदियों का वर्णन मिलता है। दस राजाओं के वैदिक युग (दाशराज्ञ युद्ध) में भाग लेने वाले अनीमत, भाल्वस, और पख्तस जैसी पश्चिमी जातियां इस क्षेत्र से संबंधित थी।

महान यूनानी इतिहासकार हेरोडोटस के अनुसार हेलमंड, हरुतरुद, फराह, खस तथा काबुल आदि नदियों के किनारे तथा आसपास रहने वाले लोग नस्ली स्तर पर आर्य रहे हैं। पुरातत्व शास्त्रियों द्वारा अनावरण किए गए कुछ महत्वपूर्ण तथ्य सामने आते हैं। जिसमें पाया कि अफगानिस्तान के प्रमुख शहर शार्तुघई का संबंध प्राचीन भारतीय हड़प्पा सभ्यता के नगरों से रहा है। शार्तुघई तथा मोहनजोदड़ो, हड़प्पा, लोथल, सुरकोटडा, कालीबंगा में हड़प्पा कालीन टेराकोटा शैली में निर्मित गाड़ियों के नमूने से प्राप्त प्रमाण, दोनों देशों के मध्य धार्मिक लगाव के अटूट काल क्रमिक साक्ष्य प्रस्तुत करते हैं। कृषि, व्यापार व पशुपालन दोनों सीमा क्षेत्र के लोगों की आम आर्थिक गतिविधियां थी। भारतीय वस्तुओं - अनाज एवं अन्य खाद्य पदार्थो तथा शार्तुघई से अत्यंत चमकीले मनकों एवं बदक्शा से लापिस लाजुली का व्यापार, हड़प्पा संस्कृति के लोगों के जीवन का सर्वाधिक प्रमुख हिस्सा थी। खैबर दर्रा और बोलन दर्रा अरबों, पश्चिमी यात्रियों, व्यापारियों तथा आक्रमणकारीयों द्वारा भारत में प्रवेश के लिए प्रयोग में लाया जाता था।

प्राचीन काल में अफगानिस्तान के पूर्वी भाग को गांधार कहते थे। गांधार महाजनपद इस क्षेत्र का भाग था। महाभारत और अन्य भारतीय ग्रंथों में गांधार का जिक्र मिलता है। गांधार का अर्थ है - 'सुगंधों की भूमि'। ऋग्वेद के अनुसार गांधार की भेड़ें उत्तम ऊन के लिए प्रसिद्ध थी। यूनानी इतिहासकार हिकैटियस ने गांधार को ईरानी जनजाति की अपेक्षा भारतीय माना था। यूनानी भूगोलवेता स्ट्रेबो गांधार को भारत का हिस्सा मानता था। टॉलमी भी गांधार को भारतीय क्षेत्रों में सम्मिलित करता है।

ईरानियों के पवित्र ग्रंथ जेन्दावेस्ता में वर्णित है हेलमंद नदी घाटी व काबुल में हिंदू सभ्यता का प्रसार था। इस क्षेत्र में ईरानियों की अपेक्षा अधिक भारतीय थे।

ऋग्वेद की शास्त्रीय संस्कृत में अफ़ग़ान लोगों को "पक्थस" के रूप में उल्लेख मिलता है।

अफगान शब्द संस्कृत मूल के "अश्व" शब्द से बना है जिसका अर्थ है - "घोड़ा", जो प्राचीन काल में "अस्प" बन गया। घोड़े के लिए फारसी शब्द "अश्ब" मिलता है। संस्कृत में इन घुड़सवारों के लिए आनुवंशिक रूप से "अश्वक" तथा फारसी में "अस्पागोन" पुकारा जाता था। अर्थात वह देश जहां आमतौर पर परिवहन का माध्यम घोड़ा हुआ करता था। इस प्रकार "पेक्टाइक" (यूनानियों के द्वारा दिया नाम) की प्राचीन भूमि फारसी भाषा में "अस्पागोनिस्तान" हो गई और अततः अफगानिस्तान।

अष्टाध्यायी के रचयिता महर्षि पाणिनी अफगानिस्तान की सीमा के पास निवास करते थे। पाणिनी ने अपने समय की अत्यंत उच्च कोटि की भौगोलिक सूचनाओं एवं स्थलाकृतियों का वर्णन किया है। पाणिनि ने कहा कि भारत का पश्चिमी बिंदु प्रकण्व (फरगना) है। हेरोडोटस ने इस स्थान को "परिकनिओई" कहा है। पाणिनी ने लिखा है कि फरगना के दक्षिण में कंबोज है, जिसको बदखशा-पामीर क्षेत्र के रूप में पहचान गया है। महाभारत में कंबोज के सर्वाधिक अच्छे कंबलों की चर्चा की गई है। हरिवंश पुराण उल्लेख करता है कि कंबोज क्षेत्रीय थे। कौटिल्य के अर्थशास्त्र में कंबोज के लोगों को वार्ताशास्त्रोपजीवी अर्थात कृषि, पशुपालन, व्यापार तथा अस्त्र-शस्त्रों से जीवन यापन करने वाले कहा गया है। कंबोज श्रेष्ठ घोड़े के लिए प्रसिद्ध था।

रामायण में वर्णित है कि राम के समकालीन गांधार का शासक नागनजित था जिसे राम के भाई भरत ने पराजित किया तत्पश्चात भरत के पुत्र तक्षक ने तक्षशिला नगर की स्थापना की जबकि उसके दूसरे पुत्र पुष्कल ने पुष्कलावती नगर की स्थापना की थी। साहित्य और पुरातत्व दोनों एक-दूसरे के प्रमाणों को सिद्ध करने के क्रम भारत और अफगानिस्तान की सामान्य मिली-जुली नीति की व्याख्या करते हैं।

महाभारत में वर्णन मिलता है कि पांडवों को जब 12 वर्ष का वनवास मिला था तब पांडवों ने बामियान में शरण ली और बामियान की पहाड़ियों में अद्भुत मूर्तियों का निर्माण किया था जिनकी उन्होंने तथा आने वाले उनके अनुयायियों ने अत्यधिक लंबे समय तक आराधना की थी।

स्लाईलैक्स जब फारसी शासक डेरियस प्रथम की आज्ञा से सिंधु घाटी क्षेत्र की यात्रा की तो बताया कि गांधारी एक भारतीय नस्ल है। उसका क्षेत्र भी गांदारी कहलाता है और उसकी भूमि "गादारियन" कहलाती है। हेरोडोटस ने अफगानिस्तान के बारे में कहा कि "गांधार के निवासी असाधारण लोग होते हैं और प्राचीन समय में भारत तथा भारत में बसने वाली जनजातियों में अत्यंत उच्च स्थान रखते थे।"

मौर्य साम्राज्य के संस्थापक चंद्रगुप्त मौर्य ने सिकंदर के सेनापति सेल्यूकस निकेटर को पराजित कर दिया। सेल्यूकस निकेटर ने एरियाना (जिसमें आरकोसिया (कंधार) तथा पेरोपनिसडाई (काबुल) शामिल थे) के बड़े भू-भाग को चंद्रगुप्त को सौंप दिया। एरियाना मध्य एशिया और सिंधु नदी के बीच भौगोलिक सीमा और साथ ही पूर्वी ईरान का एक भाग के लिए लैटिन नाम है, जो वर्तमान समय में पूरे अफगानिस्तान और पूर्वी ईरान के हिस्से को दर्शाता है। सेल्यूकस निकेटर ने अपना राजदूत मेगस्थनीज को चंद्रगुप्त के दरबार में भेजा, जिसे भारत व अफगानिस्तान के संबंध के बारे में वर्णन किया है। इतिहासकार वी ए स्मिथ के अनुसार हिन्दुकुश पर्वत भारत की वैज्ञानिक सीमा थी। "चन्द्रगुप्त मौर्य ने सेल्युकस को हराकर भारत की उस वैज्ञानिक सीमा पर अधिकार कर लिया था जिसे प्राप्त करने के लिये मुगल तथा अंग्रेज शासक व्यर्थ का प्रयास करते रहे।"

अशोक महान ने अपनी श्रेष्ठता सिद्ध करते हुए यूनानियों को भगाकर अफगानिस्तान तक अपने साम्राज्य का विस्तार किया। अशोक प्रथम शासक था जिसने अफगानिस्तान ने अपनी उपस्थिति एवं प्रभाव के प्रमाण को अपने शब्दों में छोड़ा। गांधार में अशोक द्वारा स्थापित शास्त्रीय यूनानी में 12वे शिलालेख के अंत तथा 13वे में शिलालेख के आरंभ में खुदे शब्द अफगानिस्तान पर मौर्यों के शासन का जीता जागता प्रमाण है। 12वे शिलालेख नैतिक नियमों के बारे में है तथा 13वे शिलालेख में भयानक कंप कंपा देने वाले कलिंग युद्ध के बाद उसके पछताने की बात करता है। गांधार में अशोक के अन्य शिलालेख को "लघु शिलालेख संख्या - 4" के नाम से जाना जाता है जिसमें ग्रीक और अरामाईक भाषाओं का प्रयोग हुआ है, जिसमें अशोक भविष्य में कलिंग जैसे युद्ध दोबारा न करने की बात करता है।

कुषाण शासक कनिष्क का रबातक शिलालेख अफगानिस्तान की बगलान प्रांत में सुर्खकोटला के पास रबातक स्थान से मिला है। पूर्वी अफगानिस्तान के बेग्राम नामक स्थान की खुदाई से कुषाणों के अवशेष मिले हैं। कुषाण शासक स्वयं को देवपुत्र व शिव का उपासक मानते थे। मूर्तिकला की गांधार शैली का आरंभ भी कुषाण काल में हुआ था। यद्यपि यह शैली यूनानी कला से प्रभावित थी। गांधार कला के अंतर्गत बुद्ध एवं बोधिसत्वों की बहुसंख्यक की मूर्तियों का निर्माण किया गया। बुद्ध की मूर्तियां यूनानी देवता अपोलो की नकल थी। गांधार कला अपनी विदेशी प्रभाव के फलस्वरुप भारतीय कला का सौंदर्य विहीन रूप प्रतीत होती है। कपिशा से अनेक दंतफलक मिले हैं, जिन पर अनेक मुद्राओं एवं भंगिमाओं में सुंदरियों का अंकन किया गया है।

चीनी यात्री फाह्यान ने जब अपनी यात्रा शुरू की तब वह खोतान प्रदेश को पार कर रहा था तो उसे समय खोतान के लोग हिंदू धर्म को मानते थे। यहां तक की आज भी खोतान प्रदेश की खेतानी भाषा गांधारी-प्राकृत है, जोकि मूलतः संस्कृत की एक शाखा है। खोतान में फाह्यान ने एक मूर्ति की स्थापना और जुलूस देखा। फाह्यान ने खोतान में महायान धारा के हजारों भिक्षु देखे। केवल गोमती विहार में ही 3000 भिक्षु थे और खोतान में इस प्रकार के 14 विहार थे।

गांधार में पहुंचने से पूर्व फाह्यान उद्यान देश पहुंचा, जो कि भारत के उत्तर में स्थित है। यहां पर सामान्यतः मध्य भारत की भाषा का प्रयोग किया जाता है। यहां बौद्ध धर्म को मानने वाले लोग जो की सभी हीनयान को मानते थे। फाह्यान के अनुसार गांधार में अशोक के पुत्र धर्म-विवर्धन का शासन था और अधिकांश विद्यार्थी हीनयान की शिक्षा प्राप्त करते थे। फाह्यान विवरण देता है कि कूफेन (काबुल) में 1000 से अधिक भिक्षु है। सब महायान के अनुयायी है। अफगानिस्तान में बौद्ध धर्म के साथ संबंध के बारे में स्पष्ट रूप से फाह्यान लिखता है कि दक्षिण में बर्फीला पर्वत या सफेद कोह की श्रेणियों को पार करने के बाद वे अफगानिस्तान देश में पहुँचते हैं, जहाँ हीनयान तथा महायान दोनों से संबंधित लगभग 3,000 भिक्षु निवास करते हैं।

बामियान में हिंदू राजा नरेंद्रादित्य ने छठी व सातवीं शताब्दी में बुद्ध की मूर्तियों का निर्माण करवाया था। बलुआ पत्थर की चट्टानों को काटकर बनायी बुद्ध की मूर्तियां क्रमशः 55 मीटर और 38 मीटर ऊंची थी। कभी बुद्ध की यह मूर्ति विश्व की सबसे ऊंची खड़ी बुद्ध प्रतिमा थी। जो गुप्त, सासानी और हेलेंनिस्टिक कलात्मक शैलियों के संगम का उत्कृष्ट उदाहरण है। बामियान कभी रेशम मार्ग के शुरुआती का अभिन्न अंग था, जो ने केवल व्यापारियों के लिए बल्कि संस्कृति धर्म और भाषा के लिए भी मार्ग उपलब्ध कराती थी। कुषाण काल में बामियान बौद्ध धर्म का प्रमुख केंद्र तो बना साथ ही व्यापारिक व सांस्कृतिक केंद्र बन गया।

चीनी यात्री ह्वेनसांग स्थलमार्ग से आधुनिक अफगानिस्तान के रास्ते भारत पहुंचा था। ह्वेनसांग ने पो-हो (बल्ख) को "लघु राजगृह" कहा था, क्योंकि बल्ख क्षेत्र में बौद्ध धर्म का अत्यधिक प्रभाव होने के कारण। ह्वेनसांग के अनुसार बल्ख के मठों में एक कक्ष में वॉश-बेसिन जिसका उपयोग बुद्ध ने किया था। इसके अतिरिक्त बुद्ध का एक दांत भी सुरक्षित है यह शुद्ध एवं चमकदार है, इसके अलावा बुद्ध का सफाई करने वाला एक ब्रश भी है जिसे बहुत सारे रत्नों से सुसज्जित किया गया था। इन तीनों पवित्र अवशेषों की पुजारी हमेशा पूजा अर्चना करते थे। ह्वेनसांग काबुल के उत्तर पश्चिम में स्थित बामियान के लोगों के धार्मिक जोश का वर्णन करता है, बामियान के लोग अपने आस-पड़ोस के सभी लोगों की अपेक्षा असाधारण है, धर्म के लिए प्रेम, त्रिरत्नों (बुद्ध, धम्म एवं संघ) के प्रति उच्चतम आस्था, सैकड़ो आत्माओं की आराधना के लिए उनका झुकाव, हृदय के भक्तिपूर्ण ईमानदारी की भी कमी नहीं है। यहां पर लगभग 10 मठ एवं 1000 पुरोहित रहते हैं। वे हीनयान तथा लोकोतरवाद से संबंधित है।

ह्वेनसांग ने बामियान में विशाल बुद्ध मूर्ति को देखा था। बुद्ध की यह मूर्ति की स्वर्ण आभा की तरह जगमगाती है और इसके बहुमूल्य आभूषण अपनी चमक से आंखों को चकाचौंध कर देते हैं। बुद्ध की दूसरी एक मूर्ति जो धातु वाले पत्थर से निर्मित है। बुद्ध की एक अन्य मूर्ति जो की लेटी हुई शयन की मुद्रा की एक प्रतिमा है। जिसकी लंबाई लगभग 1000 फीट के आसपास थी। ह्वेनसांग के अनुसार कपिशा का राजा क्षत्रिय था, जो प्रतिवर्ष बुद्ध की 18 फीट ऊंची चांदी की प्रतिमा का निर्माण कराता और एक सभा का आयोजन करता था, जिस "मोक्ष महापरिषद" कहा जाता है वह इस सभा में गरीब और असहाय लोगों को दान दिया करता था।

चीनी यात्री इत्सिंग ने जब भारत की यात्रा की तो वह गांधार प्रदेश से आगे नहीं गया। वह कंबोज के बारे में कहता है कि यहां पर एक क्षत्रिय राजा शासन करता था और बौद्ध धर्म भी फल-फूल रहा था।

निष्कर्ष -

भारत का अफगानिस्तान से संबंध एक दिन का नहीं हजारों वर्षों की एक अटूट कड़ी है। जो निर्बाद रूप से आज भी निरंतर जारी है। अफगानिस्तान से मिले पुरातात्विक और साहित्यिक प्रमाणों से पता चलता है कि वह क्षेत्र कभी भारत का अंग था। जिस तरह वहां से हिंदू धर्म और बौद्ध धर्म के प्रमाण मिले हैं तो यह कहना निश्चित ही गलत नहीं है कि अफगानिस्तान भारत का एक अंग रहा था। जहां भारतीय संस्कृति के प्रमाण आज भी देखे जा सकते हैं।

REFERENCES

1. श्रीवास्तव, के. सी., प्राचीन भारत का इतिहास तथा संस्कृति. इलाहाबाद : यूनाइटेड बुक डिपो
2. पाण्डेय विमलचंद्र, प्राचीन भारत का राजनीतिक तथा सांस्कृतिक इतिहास (भाग 1 व 2). इलाहाबाद : सेंट्रल बुक डिपो
3. बाशम, ए. एल., अद्भुत भारत. आगरा : शिवलाल अग्रवाल एण्ड कम्पनी
4. कौशाम्बी, दामोदर धर्मानन्द. प्राचीन भारत की सभ्यता एवं संस्कृति.
5. झा, द्विजेंद्रनारायण. कृष्ण मोहन माली. प्राचीन भारत का इतिहास. दिल्ली विश्वविद्यालय : हिंदी माध्यम कार्यान्वय निदेशालय
6. मुखर्जी, राधा कुमुद. हिंदू सभ्यता. दिल्ली: राजकमल प्रकाशन
7. पाण्डेय, राजबली. प्राचीन भारत. विश्वविद्यालय प्रकाशन
8. सेंगर, शैलेंद्र. प्राचीन भारत का इतिहास. अटलांटिक प्रकाशन प्राइवेट लिमिटेड
9. सिंह, उपेंदर. प्राचीन एवं पूर्व मध्यकालीन भारत का इतिहास. पियर्सन प्रकाशन
10. महाजन, वी. डी. प्राचीन भारत. नई दिल्ली : एस. चांद एंड कम्पनी प्राइवेट लिमिटेड